Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2581-8856

सृजन सरोकार

वर्ष 6 | अंक 4 | जुलाई–सितम्बर 2023

प्रधान संपादक
गोपाल रंजन

कार्यकारी संपादक
कुमार वीरेन्द्र

कार्यालय
G.H.-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स,
लाल मार्केट के सामने, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-110063

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

अपनी बात

आर्थिक प्रभुत्ववाद और साहित्य ____ 4

आत्मकथ्य

वह लड़का - मेरा अनन्य, मेरा 'आत्म'
-राजेन्द्र कुमार ____ 5

अस्सी के राजेन्द्र कुमार

अपने आसपास की चारूता के साथ
रचती कविताएं-ए. अरविंदाक्षन ____ 14

उदासी में उम्मीद के शब्द-प्रो. प्रभाकर सिंह ____ 19

जीवन की जटिलताओं को सरलता से अभिव्यक्त
करती कविताएँ-महेंद्र प्रसाद कुशवाहा ____ 23

एक कवि जो छन्नन जैसों को जानना चाहता है
-अर्पण कुमार ____ 28

इलाहाबाद आज़ भी आबाद है (प्रोफेसर राजेन्द्र कुमार
के लिए)-सन्तोष कुमार चतुर्वेदी ____ 31

लघुकथा

दरख्त-नीना सिन्हा ____ 32

शताब्दी-स्मरण

परसाई और आज के व्यंग्यकारों की
नज़र का फेर!-सेवाराम त्रिपाठी ____ 33

व्यंग्य की आँच और परसाई के निबंध
-आशुतोष कुमार सिंह ____ 37

एथेंस की सड़कों पर घूमता सुकरात और परसाई
-भारती वत्स ____ 41

पुनः पुनः गांधी

जैनेन्द्र की 'पत्नी' और गांधी (एक कहानी-युग्म
का विवेचन)-रामस्वरूप चतुर्वेदी ____ 45

गांधी के विचार एवं मनोविज्ञान
-धर्मेंद्र कुमार सिंह ____ 47

गांधी विचार का भविष्य-निशिकांत कोलगे से
मनोज मोहन की वार्ता ____ 49

पूर्वोत्तर का प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश और अपनी ही महोभूमि से
अनजान मीडिया-राजीव रंजन प्रसाद ____ 53

संस्मरणांजलि

ज्ञात ब्रह्मांड में मानव ही महामानव है इसकी प्रतिष्ठा
होनी चाहिए : खगेन्द्र ठाकुर-खगेन्द्र ठाकुर से
अशोक कुमार प्रसाद की बातचीत ____ 61

आलेख

आठवें दशक का स्त्री लेखन और स्त्री विमर्श
-प्रतिमा प्रसाद ____ 64

कहानी

एक रिश्ता यह भी-शैलेय ____ 68

यंगर्स लव-संदीप तोमर ____ 74

मूँछों पर ताव-अमिता प्रकाश ____ 79

प्यार के इस खेल में-ज्ञान चन्द्र बागड़ी ____ 83

कविताएं

दिनेश कुशवाह-बेटी जनम का सोहर / लिखनी /
पहेली / आदमी / फिर वही काशी फिर वही
कबीर / हँसी / सादा जीवन : उच्च विचार ____ 88

नरेश अग्रवाल-मेरी मृत्यु के बाद / आभास / पहचान /
समाज के बीच खड़ा एक आदमी / दर्द ____ 90

धीरेंद्र कुमार पटेल-पानी / परिदृश्य बदलता है /
आंखें / पगडंडियां / महानगर ____ 92

वंदना पराशर-गुम होते रिश्तों के नाम /
भागते हुए लोग / चंदा / चुप्पियां ____ 93

संदीप तिवारी-अब जब मिलेंगे / एक हरी फुनगी
जितना अच्छा / भरमखिलौना / अपना जहाँ
ठिकाना होगा / वही मेरा स्कूल ____ 95

अमरजीत राम-दमघुटनी / गटर का आदमी / चाँद,
मैं और वे / ट्विन टॉवर / छन्नू लाल ____ 97

दिव्या श्री-वर्तमान माँगता है दो पल का ठहराव /
छाती के जख्म / किताब हमारे प्रेम के
बीच का पुल है ____ 100

बीनू शारदा-गार्गी और जबाला ____ 101

ग़ज़ल

आठ ग़ज़लें-रजनीश कुमार मिश्र ____ 104

समीक्षा

आउशवित्ज़ एक प्रेम कथा : गरिमा श्रीवास्तव
-डॉ. कामिनी ____ 106

मानवीय पहलुओं का बोधगम्य चित्रण करती
कविताएँ-शशिभूषण बडोनी ____ 108

लक्षित-अलक्षित

प्रत्यालोचना 2-कुमार वीरेन्द्र ____ 110

Scanned with OKEN Scanner

आउशवित्ज़ एक प्रेम कथा : गरिमा श्रीवास्तव

डॉ. कामिनी

गरिमा श्रीवास्तव का उपन्यास-'आउशवित्ज़ एक प्रेम कथा' वाणी प्रकाशन से वर्ष 2023 में आया है। हिन्दी के पाठकों के लिए यह शीर्षक काफी आकर्षित करने वाला है। जिन लोगों ने पहले भी गरिमा को पढ़ा है वे बखूबी इस बात को जानते हैं कि उन्होंने इतिहास के उन पन्नों को हमारे सामने खोलने की कोशिश की है, जो कभी मुख्यधारा के इतिहास में शामिल नहीं हो पाए। इतिहास हमेशा विजय और पराजय का लिखा गया लेकिन वे सारे लोग जो इसकी भेंट चढ़ गए, उनकी पीड़ा को कभी दर्ज नहीं किया गया। इन आम-जनों में लाखों की संख्या में शामिल वे स्त्रियाँ हैं जिनका जीवन युद्ध ने खत्म कर दिया। जब भी युद्ध हुए एक पक्ष ने दूसरे पक्ष की स्त्रियों को अपनी नफरत की अभिव्यक्त हेतु सबसे आसान शिकार समझा। गरिमा श्रीवास्तव अपनी क्रोएशिया प्रवास-डायरी 'देह ही देश' के कवर पेज पर लिखती हैं-'उन हजारों लाखों औरतों के नाम जिनकी देह पर ही लड़े जाते हैं सारे युद्ध।'

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान पोलैंड में नाजियों द्वारा बनाए गए यातना-गृह को ही आउशवित्ज़ कहा जाता है। एक ऐसा स्थान जहाँ यहूदी, पोलिश और रूसी नागरिकों को विभिन्न प्रकार की यातनाएं दी गईं और मौत के घाट उतार दिया गया।

कहा जाता है कि जो सच इतिहास से सामने नहीं आ पाता, वह सच साहित्य में दर्ज होता है। 'आउशवित्ज़' भी एक ऐसा ही उपन्यास है। इस उपन्यास के माध्यम से गरिमा श्रीवास्तव इस बात को रेखांकित करती हैं कि भौगोलिक परिस्थितियों में अंतर आ जाने के बावजूद स्त्री के साथ किया जाने वाला व्यवहार लगभग एक सा है। चाहे भारत, पाकिस्तान या बांग्लादेश हो या रूस जर्मनी या पोलैंड स्त्री की देह हर जगह निशाने पर है। चाहे रहमाना खातून हों या सबीना की माँ या टिया या उन जैसी न जाने कितनी स्त्रियाँ सबकी कहानी एक जैसी है।

कथा प्रतीति सेन नामक एक प्रोफ़ेसर की पोलैंड-यात्रा से शुरू होती है, जो एक सेमिनार के सिलसिले में वहाँ गई हुई है। पोलैंड जाने का एक कारण जहाँ सेमिनार है वहीं दूसरा मित्र सबीना से मिलने की इच्छा भी। सबीना पोलैंड के एक नामचीन वैज्ञानिक की पत्नी है, जिससे प्रतीति का परिचय तब हुआ जब वह कोलकाता घूमने के लिए आई हुई थी लेकिन उसी एक बार की मुलाक़ात में दोनों के बीच स्नेह की एक अटूट डोर बंध गई। सबीना और प्रतीति के बीच न दिखाई पड़ने वाली यह डोर दरअसल एक ऐसे दुःख की है जो दोनों की आत्मा में बसा हुआ है। सबीना के दादा की डायरी के माध्यम से प्रतीति द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नात्सियों द्वारा यहूदियों, पोलिशों और रूसियों पर किये गए अत्याचार को नजदीक से देखती है। सबीना की माँ सिर्फ नौ साल की थीं जब उन्हें जबरदस्ती उनके माँ-बाप से अलग कर दिया गया और उसके बाद उन्होंने न जाने क्या-क्या अत्याचार बर्दाश्त किये। जब तक वे ज़िंदा रहीं कभी अपने अतीत से मुक्त नहीं हो पाईं।

प्रतीति की अपनी कहानी भी कुछ ऐसी ही मिलती-जुलती है। अंतर इतना है कि सबीना की तरह उसने कभी अपनी माँ को देखा ही नहीं। प्रतीति अपनी नानी रहमाना खातून उर्फ़ द्रोपदी देवी के साथ पली-बढ़ी हैं। द्रोपदी देवी के रहमाना खातून बनने की एक करुण कथा है। 1971 में जब पूर्वी बंगाल को पाकिस्तान से मुक्त कराये जाने का आन्दोलन चल रहा था तो द्रोपदी देवी इन सबसे अनभिज्ञ साड़ियों के व्यापारी अपने पति बिराजित सेन के साथ ढाका गईं थीं। वहाँ पाकिस्तानी उपद्रवियों द्वारा घेर लिए जाने के बाद द्रोपदी देवी ने पति की जान बचाने के लिए अपने आप को बेटी सहित उन्हें सौंप दिया। पति तो वहाँ से भाग निकले लेकिन एक कौम से नफरत की कीमत द्रोपदी और उनकी बेटी को चुकानी पड़ी। पति और ससुराल वालों के लिए उनके जीवन से ज्यादा परिवार की इज्जत प्यारी थी। जिन बिराजित सेन को बचाने के लिए उन्होंने अपने जीवन को खतरे में डाला उन्होंने भी अपनी इज्जत-आबरू की फ़िक्र ज्यादा की। जहाँ सीता को भी अग्निपरीक्षा के बावजूद निर्वासन का दंड झेलना पड़ा हो वहाँ द्रोपदी जैसी महिलाओं की क्या बिसात। न जाने कितने दिनों तक शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना झेलने के बाद भूखी-प्यासी द्रोपदी को मजबूरन

Scanned with OKEN Scanner

एक मौलवी साहब से निकाह कर रहमाना खातून बनना पड़ा। वे जान गईं थीं कि अब बिराजित सेन और उनके समाज में उनकी जगह ख़त्म हो गई है। रहमाना तमाम मुश्किलात का सामना करती हुई अपनी बच्ची टिया को ढूंढ निकालती हैं। टिया 12-13 साल की बच्ची जिसकी नसों में बहते खून के हर कतरे ने वहशत झेली थी उसकी मानसिक स्थिति की सामान्य व्यक्ति कल्पना भी नहीं कर सकता। यह पात्र उपन्याकार से अतिरिक्त संवेदनशीलता और संतुलन की मांग करता है। उपन्यास संवेदना के स्तर पर तो इस पात्र से न्याय करता है लेकिन उसका विकसन नहीं हो पाता। इस कथा यात्रा से गुजरते हुए बरबस मंटो याद आते हैं और याद आती हैं उनकी 'खोल दो' और 'ठंडा गोश्त' जैसी कहानियाँ। रहमाना टिया का लंबा इलाज करवा बिराजित की मदद से उसका विवाह एक ऐसे परिवार में करवाती हैं जो विदेश में रहता है और जो शायद टिया के अतीत को कभी नहीं जान पायेगा। उसी टिया की बेटी प्रतीति हैं जिसने अपनी माँ को कभी नहीं देखा है। रहमाना ही उनकी माँ हैं और रहमाना ही उसके पिता। रहमाना ने मछली पालने से लेकर साड़ियों का व्यवसाय करने तक अनेक कठिनाइयों के साथ प्रतीति को पाला। उसे पढ़ने के लिए कोलकाता भेजा। उन्होंने हरसंभव यह कोशिश की कि उनके अतीत का काला साया प्रतीति से दूर रहे। वे प्रतीति को पढ़ा-लिखा कर प्रोफेसर बनवाने में कामयाब भी होती हैं, लेकिन समाज की यह विडम्बना कहीं एक जगह केन्द्रित न होकर दुनिया के तमाम हिस्सों में फैली हुई है। इसीलिये प्रतीति भला उससे दूर कहाँ रह सकती थी।

सबीना के दादा की डायरी और उसके पति रेनाटा के परिवार की त्रासद कथा प्रतीति को बरबस आऊशवित्ज की तरु खींच ले जाती है। जहाँ की एक-एक दरो-दीवार यहूदियों पर किये गए अत्याचार को चिल्लाकर बताती है-''आऊशवित्ज-बिर्कानेयु उन भीषणतम यातना-गृहों में एक है जहाँ द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नात्सियों ने श्रमदान के नाम पर लाखों पोलिश विशेषकर यहूदी नागरिकों को गैस चैंबर में झोंक दिया। मैंने अतीत के जिन पन्नों को पलटने का फैसला किया है वे काले-अंधियारे पन्ने हैं, यह यूरोप का काला अतीत है जिसके अन्धकार को भेदने की कोशिश करने का अर्थ है तकलीफ और यातना के समन्दर में गोते लगाना।'' यूरोप की इस अतीत गाथा के साथ ही प्रतीति के भीतर उसकी अपनी अम्मा की कथा भी चलती रहती है। भौगोलिक दृष्टि से पोलैंड और ढाका भले ही कितनी दूरी पर हों लेकिन दोनों की कहानी लगभग एक जैसी है।

गरिमा श्रीवास्तव का यह उपन्यास जहाँ द्वितीय विश्व-युद्ध की करुण कहानी कहता है, वहीं हर देश-काल में स्त्री का शरीर कैसे किसी कौम की विजय के जश्न का खिलौना बनता है, की त्रासद सच्चाई को खोलकर हमारे सामने रख देता है। किसी धर्म, नस्ल, जाति की अन्धता हमें मानवीयता के पद से कई फिट नीचे गिरा देती है। हिटलर और उसके सहयोगियों ने जो कुछ भी किया उसका उन्हें कोई मलाल नहीं था। आज भी जब हम राष्ट्रवाद की अंधभक्ति में डूबे पड़े हैं, तो हमें अपने से इतर हर कौम दुश्मन नजर आती है। वर्तमान समय में

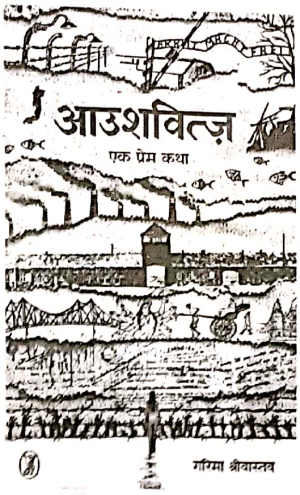

जब घृणा का प्रचार-प्रसार हमारी राजनीतिक पार्टियों का मुख्य एजेंडा बन गया है, आऊशवित्ज की याद हमें ठहरकर सोचने को मजबूर करती है। कहीं हम भी उसी दिशा की ओर तो नहीं जा रहे?

इसके साथ ही यह उपन्यास हमारा ध्यान इस ओर भी आकर्षित करता है कि पिछले दिनों मणिपुर में जो हृदय-विदारक घटना घटित हुई या इस तरह की अन्य घटनाएँ जो देश-दुनिया के विभिन्न कोनों में घटित होती रहती हैं उसका दोष किसी एक व्यक्ति या समुदाय को नहीं दिया जा सकता। यह उस मर्दवादी समाज की विकृत सोच का परिणाम है जहाँ बहुत सहज रूप से स्त्री को पुरुष के अधीन उसकी संपत्ति के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है। हमारे इस समाज में एक बच्चा पैदा होने के साथ ही अपने आस-पास उन गालियों को मंत्रोच्चार की तरह सुनता रहता है जो स्त्री देह से जुडी होती हैं। किसी भी पुरुष से अपनी नफरत का इजहार करने के लिए हम बहुत आराम से उसकी माँ, बहन या बेटी को इसके बीच ला सकते हैं क्योंकि यह समाज उनकी स्वतंत्र हैसियन न मान कर उन्हें उस पुरुष की सम्पति के रूप में देखता है। गाली देने या गलियों की प्रकृति पर सवाल खड़े करने की कोई विशेष परम्परा दिखाई नहीं पड़ती। और तो और अब जब लड़कियां भी धडल्ले से इन गालियों का प्रयोग करती दिखाई पड़ती हैं तब मानसिक अनुकूलन की इस सच्चाई को बहुत गहरे जाकर महसूस किया जा सकता है। यही दायरा बढ़ते-बढ़ते परिवार से समुदाय, जाति, नस्ल,धर्म, देश, भाषा आदि विभिन्न विभेदों तक पहुँच जाता है मसलन आपकी किसी समुदाय या धर्म से चिढ़ है तो सबसे आसान है उस समुदाय की स्त्रियों का चरित्र हनन करना। यही मानसिकता विभिन्न प्रकार के संघर्षों में काम करती है। जितने भी युद्ध या दंगे हुए हैं वे सब इस बात के गवाह रहे हैं कि किसी देश या समुदाय को जीतने का परिणाम उसकी सभी प्रकार की संपत्तियों, जिनमें महिलाएँ भी शामिल हैं, के साथ मनमाना

Scanned with OKEN Scanner

व्यवहार करना रहा है। जब विभिन्न युद्धों का इतिहास लिखा गया तो कहीं यह नहीं लिखा गया कि जिन महिलाओं का बलात्कार हुआ वे कहाँ गईं। पुरुष तो जो बचे रह गए वे युद्ध के बाद वापस अपने घरों की ओर लौट गए या नए तरीके से जीवन शुरू कर लिया लेकिन लाखों की संख्या में वे महिलाएँ क्या वापस अपने परिवार के पास लौट पाईं? क्या वे लौट कर जायेंगी तो उनका परिवार उन्हें दुबारा अपने साथ जगह देगा? इसीलिये चाहे वह रहमाना खातून हों चाहे सबीना की माँ या कोई और दुबारा उनके जीवन के उसी तरह से सामान्य होने की उम्मीद बहुत कम है।

यह उपन्यास एक ऐसे समय में आया है जब नफरत को बढ़ावा देने वाली ताकतें निरंतर सक्रिय हैं। सोशल मीडिया से लेकर मुख्यधारा के मीडिया तक इसका भरपूर प्रचार किया जा रहा है। केवल रक्त-शुद्धता के अपने नशे में हिटलर ने लाखों लोगों को मौत के घाट उतार दिया। शुद्धता के इस नशे का कोई अंत नहीं है, वह कभी समाप्त नहीं हो सकता। एक धर्म, एक समुदाय से शुरू होने वाली यह प्रवृत्ति मनुष्यता के अंत तक पहुँचती है। यह एक ऐसा नशा है जो अन्य सभी प्रकार के नशों से ज्यादा भयानक और विनाशकारी है। आउशवित्ज में मारे गए लोगों की वस्तुओं में लाखों की संख्या में नन्हें बच्चों के जूते-चप्पलों के साथ पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के केश भी रखे हुए हैं, जो अत्याचार की भयानक कथा कहते हैं। वे लिखती हैं-'देखो! देख लो अंधराष्ट्र वाद कहाँ ले जाता है। विवेक बुद्धि पर पर्दा पड़ जाता है, मेरी नस्ल सबसे ऊंची, जीने का हक़ सिर्फ मेरा, जिसकी नस्ल अलग, रूप-रंग अलग उसे मार दो, जला दो। उसे जीने का हक़ ही क्यों कर हो?' आज हम लोगों के ऊपर भी कुछ इसी प्रकार का नशा सवार हो रहा है।

उपन्यास का शीर्षक 'आऊशवित्ज एक प्रेम कथा' है। उपन्यास की कथावस्तु की दृष्टि से यह शीर्षक एकदम सटीक है। यहाँ द्रोपदी देवी-बिराजित सेन और प्रतीति-अभिरूप के साथ-साथ उन हजारों लोगों की प्रेमकथा है जो एक दूसरे से दूर और अलग रहकर भी प्रेम एहसास से दूर नहीं हो पाए। द्रोपदी का बिराजित से प्रेम था जो उनके जीवन की दिशा को एकदम से बदल देता प्रेम ही था टिया और प्रतीति के साथ जिसमें वे अपने स दु:ख-तकलीफों को हँसते हुए भुला देती हैं। उस दु:ख क छाया न टिया के जीवन पर पड़ने देती हैं, न प्रतीति क एक प्रेम प्रतीति-अभिरूप का है जिसका घेरा हमेशा प्रती के इर्द-गिर्द बना रहता है। प्रेम यहाँ अपने उसी स्वरूप स फल है, जो हर तरह की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं से दू रहता है। तब प्रेम बाँधने वाला नहीं मुक्त करने वाला ह जाता है। पूरा उपन्यास नफरत के खिलाफ प्रेम का एक सन्देश है। प्रेम ही वह डोर है जो अंधभक्ति और अन्धराष्ट्रवाद के इस दौर में बुद्धि और विवेक की ताकत प्रदान करता है। प्रेम की यह डोर देश-काल की सीमा से परे चली जाती है और यही मानवता का संदेश है।

उपन्यास इस मायने में भी सफल है कि अलग-अलग समय में फैली हुई कथा को डायरियों और पत्रों के माध्यम से बहुत सलीके के साथ समेटा गया है। अलग-अलग देश और काल की परिस्थितियां कैसे संवेदना के स्तर पर एक हो जाती हैं यह इस उपन्यास के शिल्प की खासियत है। पात्रों के रूप में प्रतीति और सबीना को छोड़कर बाकी सारे पात्र परदे के पीछे हैं, लेकिन जब हम उनकी कहानी पढ़ रहे होते हैं तो वे अपनी पूरी सच्चाई के साथ हमारे सामने जीवंत हो उठते हैं। इधर के दिनों में उपन्यास की शैली को लेकर नए-नए प्रयोग किये जा रहे हैं। गरिमा श्रीवास्तव मूलत: शोधकर्ता रही हैं और इस काम को वे बहुत संजीदगी से करती हैं। इस उपन्यास में भी कहीं-कहीं उनके इस रूप की छाप दिखाई पड़ती है,लेकिन इतने गंभीर विषय को लेकर जिस सुगठित ढंग से उन्होंने इसका निर्वाह किया है वह काबिलेतारीफ है। ■

डॉ. कामिनी राजीव गांधी पी. जी. कॉलेज अंबिकापुर, छत्तीसगढ़ में सहायक प्राध्यापक (हिंदी) के रूप में कार्यरत हैं।

मानवीय पहलुओं का बोधगम्य चित्रण करती कविताएँ

शशिभूषण बडोनी

न्यू वर्ल्ड प्रकाशन से चयनित कविताओं की सीरीज के अर्न्तगत प्रकाशित माया गोला की कविताएँ गौरतलब हैं।

इस संग्रह में कवि ने जीवन के विविध पक्षों की अत्यन्त सूक्ष्मता से इन कविताओं को पठनीय और बोधगम्य पूर्ण शैली में रचा है। पाठक इन कविताओं की सहजता, सरलता के कारण इनकों शीघ्र ही संप्रेषित कर आत्मसात भी कर लेता है। कुछ जटिल पक्षों को भी अत्यन्त सहजता से बोधगम्य बनाने का कवि ने अपने अनूठे शिल्प द्वारा प्रयास किया है।

Scanned with OKEN Scanner